विराटत्व की अलौकिक यात्रा है 'राम की शक्ति पूजा'

डॉ. हरीश अरोड़ा,
पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य),
(दिल्ली विश्वविद्यालय),
नेहरू नगर, नई दिल्ली–110065

'राम की शक्ति पूजा' निराला की ही नहीं वरन् हिन्दी साहित्य की महान रचनाओं में अपना स्थान रखती है। आकार की दृष्टि से लघु होने के बावजूद इसमें महाकाव्योचित औदात्यता का गुण इसे विराटत्व की ओर ले जाता है। निराला की अन्य कविताओं अथवा काव्य–कृतियों की तुलना में यह कविता उनसे कहीं अधिक श्रेष्ठ है। भाव की दृष्टि से राम के मन के अन्तर्द्वन्द्व का ऐसा उत्कृष्ट चित्रण अन्यत्र दुर्लभ है। कला की दृष्टि से तो यह हिन्दी कविता में सर्वोत्कृष्ट कविताओं की अग्रिम पंक्ति में स्थान पाती है। हिन्दी की वर्णनात्मक कविता में अभिव्यक्ति का ऐसा ओजस्वी चमत्कार अन्यत्र मिलता हो, ऐसा सम्भव नहीं। विश्व की महान कृति 'पैराडाइज़ लॉस्ट' के पहले सर्ग के आरम्भिक अंश में जो कलात्मक कौशल दिखाई पड़ता है। 'राम की शक्ति पूजा' का प्रवाह उसके समानान्तर ही रहता है। लेकिन 'राम की शक्ति पूजा' की समास शैली की परुषावृत्ति तो 'पैराडाइज लॉस्ट' में भी दिखाई नहीं देती।

'निराला' तो हिन्दी कविता के पौरुष के शाश्वत प्रतीक थे। उनके काव्य की महाप्राण ध्वन्यात्मकता ही उन्हें 'महाप्राण निराला' के रूप में सुशोभित करती है। 'राम की शक्ति पूजा' में यह महाप्राणता आरम्भ से अंत तक अद्वितीय भूमिका निभाती है। डॉ. रामप्रसाद मिश्र की यह उक्ति अत्यन्त ही सार्थक है – ''**महाप्राण निराला उस महान कविता में श्लिष्ट ऐश्वर्य से सम्पन्न हो गए हैं। 'एष देवो विश्वकर्मा महात्मा' तथा 'कविर्मनीषी परिभूस्वयंभू' की प्रतीक–सृष्टि से सम्पन्न अक्षर की अक्षर विभूति से सम्पन्न; प्रत्येक वर्ग का द्वितीय और चतुर्थ वर्ग – कवर्ग में ख–घ, चवर्ग में छ–झ, टवर्ग में ड–ढ, तवर्ग में थ–धा तथा पवर्ग में फ–भ भी महाप्राण कहलाता है, 'शिव ताण्डवस्तोत्र' तथा 'हनुमान बाहुक' की–सी रचना में सफल हुए हैं।**''[1] छंद का अद्भुत गठन, भाषा की ओजस्विता, भावों का औदात्य और शिल्प की नव्यता ने 'राम की शक्ति पूजा' को विश्व की अमर निधि बना दिया है।

'राम की शक्ति पूजा' का वास्तविक सूत्रा उसकी एक पंक्ति में ही विद्यमान है – 'धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध'। वास्तव में मूल संघर्ष तो निराला के स्वयं के हृदय में ही था, राम कथा उनके इस सत्य का निमित्त थी। इस कथा की नाटकीय संरचना में इतना अधिक कौशल है कि कवि का 'स्व' पूर्णतः कथा में राम के भीतर ही समा गया है जो दिखता तो है किन्तु राम के रूप में। पौराणिक ग्रंथों में बाल्मीकि रामायण, शिवमहिम्न स्तोत्र, बंगाल रामायण, रामचरित मानस आदि महान रामचरित की कृतियों से इस कथा के सूत्र एकत्र किए हैं। कविता की मूल–कथा प्रसिद्ध है। राम–रावण पर विजय प्राप्त करने में जब असफल होता है तब वह शक्ति की आराधना करता है। इसी कथा के मध्य विकास की कथा कवि की मौलिक सर्जना से युक्त होकर अत्यन्त सुन्दर बन पड़ी है।

कथा का आरम्भ युद्ध स्थल से राम के उस दिन के युद्ध में विजय प्राप्त न कर पाने की निराशा से होता है। उन्हें इस बात की चिन्ता है कि आदि शक्ति भी असुरों का पक्ष लेकर असत्य

का साथ दे रही है। राक्षस सैनिकों का उल्लास और राम की सेना में निराशा का भाव अत्यन्त कलात्मक स्तर पर प्रस्तुत हुआ है। राम ईश्वर हैं लेकिन आदि शक्ति के समक्ष वे भी नत् हैं। इसीलिए उनके अन्तर्मन में रावण को पराजित न कर पाने का संशय उठता है–

स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर–फिर संशय,
रह–रह उठता जग–जीवन में रावण जय–भय।[2]

निराशा की उस अवस्था में किसी को भी बोध नहीं था केवल हनुमान को प्रबोध था और शेष सभी आहत और निश्चेष्ट होकर मति से परे थे। ऐसे में राम की मानसिक अवस्था को ओर अधिक गम्भीरता और गहराई देने के लिए कवि कहता है –

है अमानिशा उगलता गगन घन अन्धकार
खो रहा दिशा का ज्ञान स्तब्ध है पवन–चार
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भूधर ज्यों ध्यान–मग्न, केवल जलती मशाल।[3]

सीता राम की शक्ति है। इसलिए सीता के प्रेम में राम ने सागर पर पुल बाँध डाला था, लंका को ध्वस्त कर दिया था। इसी निराशा के क्षणों में निराला ने राम के मन में सीता की स्मृतियों का आगमन किया।

फूटी स्मिति सीता ध्यान लीन राम के अधर,
फिर विश्व–विजय भावना हृदय में आई भर,
वे आए याद दिव्य शर अगणित मन्त्रापूत,
फड़का कर नभ को उड़े सकल ज्यों देवदूत,
देखते राम, जल रहे शलभ ज्यों रजनीचर,
ताड़का, सुबाहू, विराध, शिरस्त्राय, दूषण, खर।[4]

किन्तु वर्तमान परिस्थितियाँ भिन्न हैं। स्वयं आदि शक्ति रावण को अपने अंक में लेकर उसकी रक्षा कर रही हैं–

फिर देखी भीमा मूर्ति आज रण देखी जो
आच्छादित किय हुए सम्मुख समग्र नभ को।[5]

ऐसे क्षण राम की आँखों से आँसू की दो बूँदें टपक कर गिरती हैं। हनुमान उन अश्रु कणों को आस्ति–नास्ति के एक रूप में देखते हैं। एकादशरूद्रावतार 'हनुमान' अपने प्रभु की आंखों से गिरे उन दो अश्रुकणों की विचारणा मात्रा से ही शक्ति से द्वन्द्व के लिए उ(त हो उठते हैं–

'ये अश्रु राम के' आते ही मन में विचार
उद्वेल हो उठा शक्ति–खेल–सागर अपार,
हो श्वसित पवन–उनचास, पिता पक्ष से तुमुल
एकत्र वक्ष पर बहा वाष्प को उड़ा अतुल,
शत घूर्णावर्त, तरंग–भंग उठते पहाड़,
जल–राशि राशि जल पर चढ़ता खात पछाड़
तोड़ता बन्ध–प्रतिसन्ध धरा, हो स्फीत वक्ष,
दिग्विजय–अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।
शत–वायु–वेग–बल डूबा अतल में देश–भाव,
जलराशि विपुल मथ मिला अनिल में महाराव
वज्रांग तेजघन बना पवन को, महाकाश,
पहुँचा एकादशरूद्र क्षुब्ध कर अट्टहास।[6]

सत्य है कि शक्ति जो शिव का अंश है वह शिव के एकादश अवतार के समक्ष निश्चित रूप से पराजित हो जाती। राम की अर्चना की मूर्ति अनुमान द्वारा शक्ति पर विजयपाने के लिए आकाश की ओर बढ़ना और विद्या के आश्रय द्वारा उनकी प्रचण्डता पर विराम लगाकर उन्हें ज्ञान देना कवि के विराटत्व की ओर इंगित करता है। उधर विभीषण भी अपने मित्रत्व धर्म का पालन करते हुए रावण के अवगुणों का वर्णन करते हुए राम को निराशा से अंधकार से बाहर लाने के लिए प्रयास करते हैं–

मैं बना किन्तु लंकापति, धिक् राघव, धिक् धिक्।[7]

किन्तु उनकी व्यंग्योक्ति का राम पर इच्छित प्रभाव न हो सका क्योंकि राम जानते थे कि यह युद्ध राम और रावण की सेनाओं के मध्य नहीं वरन् एक ओर राम तथा वानर–सेना तथा दूसरी ओर अन्यायी रावण और महाशक्ति विद्यमान है। ऐसे समय में ज्ञानी जाम्बवान, राम से कहते हैं कि जब देवी अधर्मरत रावण पर अपनी कृपा दृष्टि रख सकती हैं तो धर्म के रक्षक राम पर उनकी कृपा क्यों नहीं होगी। इसीलिए वे राम को शक्ति–पूजा के लिए उद्‌बोधित करते हैं।

राम ने जाम्बवान का परामर्श स्वीकार कर शक्ति–पूजा आरम्भ की। शक्ति की आराधना करते–करते आठ दिवस बीत गए। आठवें दिन जब राम सहस्रार–सिद्धि के बिल्कुल समीप पहुँच गए तब माँ भगवती उनकी परीक्षा के लिए आईं और हँसकर अंतिम पूजा–कमल उठा ले गईं। ध्यानस्थ राम के बंद नेत्रों से यथास्थान रखे पूजा के कमल को उठाना चाहा तो उन्हें वह वहाँ नहीं मिला। नेत्रा खोले तो कमल वहाँ था ही नहीं। साधना में बीच में ही उठ जाना अशुभ होता है यह सोचकर राम का मन व्याकुल हो उठा–

धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध
धिक् साधन जिसक लिए सदा ही किया शोध
जानकी! हाय उ(ार प्रिया का हो न सका।[8]

ऐसे में उन्हें माता कौशल्या का उनके लिए 'राजीवनयन' विशेषण याद हो आया और वे अपने नेत्रा को ही पूजा–कमल की अंतिम भेंट के रूप में चढ़ाने के लिए उद्धत हो गए–

जिस क्षण बँध गया बेधने को दृग दृढ़ निश्चय,
काँपा ब्रह्माण्ड, हुआ देवी का त्वरित उदय :–
'साधु, साधु, साधक धीर, धर्म–धन धन्य राम!'
कह लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम।
'होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन!'
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।[9]

इस प्रकार 'राम की शक्ति पूजा' की कथा भाव के सतर पर उदारता और वैचारिकता के स्तर पर विराटत्व का पूर्ण स्पर्श करती है। भारतीय परम्परा के अनुरूप महाकाव्योचित लक्षणों के अंतर्गत 'सुखांत' कथानक का इतना अभिनव प्रयोग वास्तव में ही दुर्लभ है। एक महागौरव की कथा को छोटे से आकार में किन्तु विशाल चित्रफलक पर प्रस्तुत करते हुए निराला ने उसमें ऐसी गरिमा की सर्जना की है जो महाकाव्यों में ही दृष्टिगत होती है। हिन्दी कविता में भले ही इसे 'लम्बी कविता' के रूप में विधा का आवरण दे दिया गया हो किन्तु विश्व के महानतम् महाकाव्यों के समकक्ष इसकी उदात्तता कम नहीं।

हिन्दी कविता में वर्ष 1936 हिन्दी के अमर साहित्य के लिए सदैव जाना जाता रहेगा। इसी वर्ष 'कामायनी' और 'गोदान' का साहित्य के आकाश में उदय और 'राम की शक्ति पूजा' द्वारा उनके गौरव में अभिवृद्धि इस वर्ष की श्रेष्ठतम उपलब्धियाँ रहीं। लेकिन काव्यात्मक–कलात्मकता की दृष्टि से 'राम की शक्ति पूजा' उक्त दोनों कृतियों से कहीं अधिक श्रेष्ठ कृति है। उसका–सा अद्वितीय समास–शैली–युक्त ओजस्वी स्वर विश्व साहित्य में श्रृंगार का नवीनतम आभूषण रहा है। उनका–सा विराट अलंकरण, विराट बिम्बविधान, विराट उदात्त साहित्य में अतुलनीय है।

छायावादी कल्पना की अपार शक्ति 'निराला' में भी विद्यमान है। 'राम की शक्ति पूजा' के मार्मिक प्रसंगों को निराला ने कल्पना द्वारा अधिक गहन बना दिया है। राम और सीता के प्रथम मिलन का भावप्रवण दृश्य उनकी कल्पना–शक्ति का उदात्त स्वरूप लक्षित करता है–

पलकों पर नव पलकों का प्रथमोत्थान–पतन
काँपते हुए किसलय–झरते पराग–समुदय
गाते खग–नव–जीवन–परिचय तरु मलय वलय
ज्योतिःप्रपात स्वर्गीय–ज्ञात छवि प्रथम स्वीय

जानकी–नयन–कमनीय प्रथम कम्पन उरीय।[10]

इस कविता की एक महती विशेषता इस बात में है कि इसकी जैसी नाटकीयता निराला की किसी अन्य कविता में नहीं है। जीवन के विविध चित्रणों के साथ–साथ मानव मन की अनुभूतियों के साथ उनका तादात्म्य नाटकीय रूप को अधिक उभारता है। नाटकीय रूप में लिखी 'लम्बी कविता' के परिदृश्य में कवि ने अर्थ के विभिन्न स्वरों को ध्वनित किया है। यह केवल राम और रावण का युद्ध नहीं था, यह धर्म और अधर्म का, पुण्य और पाप का, प्रकाश और अंधकार का, सत्य और असत्य का तथा आशा और निराशा का युद्ध था। यदि भारतीय पराधीनता के परिप्रेक्ष्य में देखें तो दूधनाथ सिंह के अनुसार– **'कहीं–कहीं इस कविता में राम के माध्यम से निराला की राष्ट्रीय गुलामी से मुक्ति की चिन्ता झलक मारती है। यद्यपि इस अर्थ को पूरी कविता में बहुत सावधानी से पिरोया नहीं गया है। एक स्थूल ढंग से राम की विजय और सीता की मुक्ति की चिन्ता को हम राष्ट्र–मुक्ति और मर्यादा की रक्षा के लिए युद्ध में नियोजित होने के नैतिक पक्ष को कविता में खींच सकते हैं।''**[11]

'राम की शक्ति पूजा' की भाषा के सन्दर्भ में यदि विश्लेषण किया जाए तो ऐसा भाव और प्रसंगानुकूल भाषा प्रयोग वास्तव में ही अद्वितीय है। ओजपूर्ण और रौद्र भावों के लिए कवि ने महाप्राण ध्वनियों का अद्‌भुत प्रयोग किया है। द्वित्व वर्णों से इन भावों में ओर अधिक परुषता आने के कारण अधिक गहनता प्रकट हुई है।

शत घूर्णावर्त, तरंग–भंग उठते पहाड़,
जल–राशि राशि जल पर चढ़ता खात पछाड़
तोड़ता बन्ध–प्रतिसन्ध धरा, हो स्फीत वक्ष,
दिग्विजय–अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।
शत–वायु–वेग–बल डूबा अतल में देश–भाव,
जलराशि विफल मथ मिला अनिल में महाराव
वज्रांग तेजघन बना पवन को, महाकाश,
पहुँचा एकादशरूद्र क्षुब्ध कर अट्‌टहास।[12]

वहीं दूसरी ओर कवि ने कोमल भावों की अभिव्यक्ति के लिए कोमलकान्त पदावली के उत्कृष्ट प्रयोग द्वारा संयोग के क्षणों को अधिक मर्मानुभूति प्रदान की है–

नयनों का–नयनों से गोपन–प्रिय सम्भाषण,
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान – पतन,
काँपते हुए किसलय,– झरते पराग–समुदय,
गाते खग नव–जीवन–परिचय,–तरु
मलय–वलय।[13]

कविता की आरम्भिक पंक्तियों में लगातार सोलह पंक्तियों तक पूर्ण संस्कृतनिष्ठ समास–बहुला भाषा द्वारा कवि ने हिन्दी कविता में एक नव्य प्रयोग किया। इसे कई आलोचकों द्वारा उपहास की दृष्टि से देखा गया किन्तु ऐसा औदात्य वास्तव में विषय की गरिमा और भाव के अनुरूप इस कविता में आवश्यक भी था। यहाँ तक की इस कविता के छंद–कौशल ने तो हिन्दी कविता में जहाँ 'मुक्त छंद' की एक महान रचना को हिन्दी साहित्य–संसार को उपहार दिया वहीं हिन्दी कविता में इसे 'शक्ति छंद' कहकर भी जाना जाने लगा।

'राम की शक्ति पूजा' की कलात्मकता अभिनव है। अलंकारों, प्रतीकों और बिम्बों की छटा तो वास्तव में ही द्रष्टव्य है। विशेषकर बिम्ब तो इस कविता में प्राणशक्ति के रूप में इसके भावों को अधिक प्रबल बनाने में सक्षम रहे हैं। विशेष रूप से राम के मन की निराशा और चारों ओर छाए गहन अन्धकार का बिम्ब वास्तव में ही अवलोकनीय है–

है अमानिशा उगलता गगन घन अन्धकार
खो रहा दिशा का ज्ञान स्तब्ध है पवन–चार
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल

भूधर ज्यों ध्यान–मग्नऋ केवल जलती मशाल।[14]

अपने आत्म–साक्षात्कार के भीतर से जीवन के सत्य को उभारने वाले निराला ने रचनात्मक जगत के अनेक विरोधों को सहने के बावजूद हिन्दी कविता को ऐसा अतुलनीय आभूषण भेंट किया है जिसकी आभा से हिन्दी का आकाश सर्वत्रा दैदीप्यमान है। यह कविता सही मायनों में ही निराला साहित्य का प्रतिनिधित्व करती है।

संदर्भ

1. मिश्र, रामप्रसाद; 'महाप्राण निराला'; आलोचना सागर, साहित्यागार प्रकाशन, गाजियाबाद, पृष्ठ 460
2. निराला. सूर्यकांत त्रिपाठी; निराला रचनावली (सं. नंदकिशोर नवल); राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 311
3. वही, पृष्ठ 312
4. वही, पृष्ठ 312
5. वही, पृष्ठ 313
6. वही, पृष्ठ 315
7. वही, पृष्ठ 318
8. वही, पृष्ठ 319
9. वही, पृष्ठ 312
10. वही, पृष्ठ 313
11. सिंह, दूधनाथ; निराला आत्महंता आस्था; लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 164
12. निराला. सूर्यकांत त्रिपाठी; निराला रचनावली (सं. नंदकिशोर नवल); राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 312
13. वही, पृष्ठ 311
14. वही, पृष्ठ 311

Copyright © 2015 Dr Harish Arora. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.